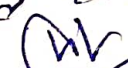


फर्द अहकाम

न्यायालय उपखण्ड अधिकारी एवं उपखण्ड मजिस्ट्रेट सांगानेर जयपुर

गुलशिराज बनाम धीरज

ख्या:- 118/2024

	आज्ञा विस्तृत रूप से	विशेष विवरण
24	<p>पञ्चवली वार्ड आस्था प्रायतः ठासुगडे निषेधाया हेतु प्रकृत इधे प्रायतः ठासुगडे निषेधाया अस्वीकारकार श्वारिज किम जाता हे विस्तृत निगीप प्रुगत से लिखतवला जाकर शामिल पञ्चवली किम गमा पञ्चवली मेखत श्वारिज घेकर से नठ से कत हे बरफ पकामेन इखित दस्तखत हे</p> <p style="text-align: right;">                       उपखण्ड अधिकारी                      जयपुर द्वितीय (सांगानेर)                 </p>	



न्यायालय उपखण्ड अधिकारी जयपुर द्वितीय सांगानेर, जयपुर  
पीडसीन अधिकारी श्री हिम्मत सिंह आर० ए० एस०

प्रार्थना पत्र संख्या: 118/2024  
प्रवेश तिथि : 14/5/2024

1. तुलसीराम पुत्र मूलचन्द
2. सुरज पुत्र मूलचन्द
3. नाथी देवी बेका मूलचन्द
4. अमिता पत्नि राजकुमार
5. अमित पुत्र राजकुमार
6. मिन्ना पुत्री राजकुमार

जातिथान बागडा ब्राह्मण निवासी जगन्नाथपुरा तहसील सांगानेर  
जिला जयपुर

-प्राथीगण

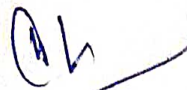
- बनाम
- दीतर पुत्र जगन्नाथ  
भुरी देवी पुत्री जगन्नाथ पत्नी किवान जाति बागडा ग्राम बालावला  
तहसील सांगानेर जिला-जयपुर  
मनभर देवी पुत्री जगन्नाथ पत्नी स्व० श्री रामनारायण ग्राम सरोली  
तहसील सांगानेर जिला जयपुर  
धामू देवी पुत्री जगन्नाथ पत्नी हरसहय ग्राम हरनाथ बेरीया  
तहसील जयपुर, जिला जयपुर  
बाबूलाल पुत्र जगदीश  
रामप्रसाद पुत्र जगदीश  
दोशीलाल पुत्र जगदीश  
लालचन्द पुत्र जगदीश  
छाली देवी पत्नी मंगलाराम  
ओमप्रकाश पुत्र मंगलाराम  
मदनलाल पुत्र मंगलाराम  
पप्पू पुत्र मंगलाराम  
नाथूराम पुत्र गुल्लाराम  
समस्त जाति बागडा ब्राह्मण निवासी जगन्नाथपुरा तहसील  
सांगानेर जिला जयपुर।  
सरकार जरिये तहसीलदार सांगानेर जिला जयपुर  
उप पंजीयक सांगानेर जिला जयपुर

- अप्राथीगण

1. जगदीश पुत्र प्रभात
  2. रामप्रसाद पुत्र प्रभात
  3. कल्याणी देवी पत्नि प्रभात
- समस्त जातिथान बागडा ब्राह्मण निवासी जगन्नाथपुरा  
तहसील सांगानेर जिला जयपुर

- तरतीवी अप्राथीगण

- लगातार

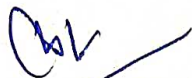
  
उपखण्ड अधिकारी  
जयपुर द्वितीय (सांगानेर)

प्राचीन पत्र धारा अन्तर्गत 212 राखण कारखाना  
अधिनियम 1955 संपर्कित आदेश 39 नियम  
1 व 02 संपर्कित धारा 151 सी.पी.सी वाकल  
अस्थाई निषेधाज्ञा

निर्णय

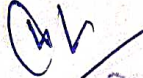
दिनांक: 13/8/24

प्राचीन ने एक वाद पत्र बाबत धोखा, विमोजन व स्थाई  
निषेधाज्ञा के साथ प्राचीन पत्र धारा अन्तर्गत 212 राखण कारखाना अधिनियम  
1955 वाकल अस्थाई निषेधाज्ञा का पेवा किया जिसका सूक्ष्म वृत्तान्त  
स प्रकार है कि प्राचीन सं. 1 ला० 6 स्वर्गीय मूलचन्द पुत्र हुक्मा  
कारिधान है तरतीकी अप्राचीण संख्या 16 ला० 18 स्व० प्रभात पुत्र  
पुन्नीलाल के कारिधान है, प्रभात पुत्र पुन्नीलाल का दिनांक 25/12/83  
मूलचन्द पुत्र हुक्मा का दिनांक 24/01/11 को स्वर्गीय हो चुका  
वादगुला आराजी साबिक ख० न० 201 रकबा 1 बीघा व ख० न०  
02 रकबा 20 बीघा 5 बिस्वा केके ग्राम जगन्नाथपुरा तहसील  
सांगानेर जिला जयपुर के 2/3 हिस्सा स्वतदार अप्राची सं. 1 ला० 4  
5 पिता जगन्नाथ पुत्र महेदेव ने अपना हिस्सा मे से 1/3 हिस्सा  
अरिये रजिस्टर्ड विक्रयपत्र दिनांक 9/7/1975 को प्राचीन 1 ला० 3 के  
पिता व 4 ला० 6 के दादा मूलचन्द पुत्र हुक्मा व तरतीकी अप्राचीण  
संख्या 16 ला० 17 के पिता व 18 के पति प्रभात पुत्र पुन्नीलाल को  
विक्रय कर मौके पर कब्जा करा दिया। प्राचीण के पूर्वज मूलचन्द  
पुत्र हुक्मा द्वारा साबिक ख० न० 202 मे से 1/3 हिस्सा की कुल भूमि  
3 बीघा 15 बिस्वा के 1/2 हिस्से अर्थात् 3 बीघा 17.5 बिस्वा का पूर्व  
स्वतदार जगन्नाथ से जयिये विक्रयपत्र किय कर प्राचीण के पूर्वज  
मूलचन्द तथा वर्तमान मे प्राचीण काबिल कारत है। उक्त भूमि  
का विक्रय के आधार पर नामा सं. 34 ग्राम जगन्नाथपुरा जिला  
मूलचन्द व प्रभात के हक मे दर्ज को तहसीलदार सांगानेर द्वारा  
दिनांक 16/08/1976 को रजिस्ट्र कर दिया गया। उक्त नामानकरण  
की अपील वर्तमान मे न्यायालय सम्मानीय आयुक्त जयपुर के समक्ष  
विचाराधीन है। तहसील सांगानेर मे हाल मूलचन्द सेवेक्षण सम्वत्  
2046 ला० 2065 मे साबिक ख० न० 202 के वर्तमान ख० न० 269  
रकबा 0.35 है, 270 रकबा 0.10 है, 271 रकबा 1.04 है, 272  
रकबा 0.06 है, 273 रकबा 0.75 है, 275 रकबा 0.19 है, 285  
रकबा 0.75 है, 286 रकबा 0.15 है, 287 रकबा 0.55 है, 318  
रकबा 0.90 है (कुल कित्ता 10 कुल रकबा 5.07 है) कने है।  
अप्राचीण 1 ला० 5 की माता स्व० भुषी देवी पत्नी जगन्नाथ द्वारा  
नामा संख्या 22 दिनांक 23/6/92 को जगन्नाथ की विरासत के आधार  
करा किया। उसके पत्रवाल स्व० जगन्नाथ ने ख० न० नम्बर 202  
रकबा 20 बीघा 06 बिस्वा के 1/4 हिस्सा की अपनी सहमति से  
अरिये डिफ्री दिनांक 12/05/1992 न्यायालय उपखण्ड अधिकारी  
जयपुर अपने आई-गुल्ला पुत्र महेदेव के नाम अंकित करवा दिया  
- लगातार

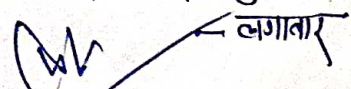
  
उपखण्ड अधिकारी  
जयपुर द्वितीय (सांगानेर)

अक्त डिप्टी कमिश्नर 22/5/1992 मुं० न० 88/92 वर्तमान में न्यायालय  
 राजस्व अपील अधिकारी जयपुर में विचाराधीन है वर्तमान में अक्त  
 भूमि में से जगन्नाथ पुत्र मलदेव (अप्राची) 1 ला० 13 के पूर्व (1) के  
 हिस्से की 1/2 कृषि भूमि विभाजित होकर राजस्व जमाबन्दी के खान  
 न० 51 में ख० न० 274। रकबा 0.18 है, 225 रकबा 0.75 है,  
 86 रकबा 0.15 है 227 रकबा 0.55 व 318 रकबा 0.90 है के  
 य में दर्ज हुई है अक्त भूमि विवादग्रस्त भूमि से सम्बन्धित किया  
 या है अप्राची सं. 1 व अप्राची सं. 2 ला० 12 व 13 की मीयत में  
 इमानी आ गई और के सम्पूर्ण भूमि को स्वयं की बताने लगे।  
 नं० 10।4।2012 को जब प्राचीगण सं. 1 व 2 वादग्रस्त भूमि पर  
 ये तो कृषि से अकृषि में परिवर्तित कठि के उद्देश्य से अप्राची  
 सं. 1 ला० 13 भूमि पर रोड चलने का प्रयास कठि लगे और कछा डि  
 त जमीन पर तुम्हारा कोई लेना देना नहीं है बल्कि 1/2 हिस्सा की  
 मूर्ण भूमि हमारी ही है इसलिये हमने जमीन सोसायटी वालों के  
 कृप्य कर रहे हैं तथा वेदक कर जवरन कब्जा कठि की धमकी  
 में इस कारण प्राचीगण जपण स्थाई निषेधाज्ञा पेश किया जाकर  
 निषेध है कि अप्राचीगण को अस्थाई निषेधाज्ञा पाबन्ध किया जावे कि  
 वत वादग्रस्त आराजी में पार दिवारी तथा अन्य निर्माण कार्य नहीं  
 किया जावे, न ही किसी अजनबी क्रेता को विरिष्ट भू-भाग बय अक्षा  
 रतान्तरित किया जावे, प्राचीगण को अपनी रवावेदारी कृषि भूमि में क्खा  
 गइत में कोई मजहमत व दखलदानी नहीं की जावे तथा वादग्रस्त  
 भूमि के रिकार्ड एवं मौके की वर्तमान स्थिति को लाफैसला वादग्रस्त  
 बनाये रहे।

प्राचीगण का प्राचीना पत्र दर्ज रजिस्टर किया जाकर अप्राचीगण  
 में अर्थ रजिस्टर्ड अक्त नोटिस जारी किये गये अप्राचीगण न्यायालय  
 राजा में उपस्थित होकर जकार पेश किया जिसका सूझम इतान्त  
 इस प्रकार है कि प्राचीगण ने मूलचन्द के कारिमान नहीं है प्राचीगण  
 मूलचन्द के वारिस होने के कथन को स्वयं साबित करे। खानदान सज्ज  
 भी गलत है। रकबा नम्बर 201 व 202 दोनों खसरो का रकबा 20  
 बीघा 5 विस्वा होने का कथन गलत है यह भी गलत है कि जगन्नाथ  
 पुत्र मलदेव का उनमें 2/3 हिस्सा रखे। विक्रय पत्र दिनांक 07/07/1975  
 अवैध, अनाधिकृत व फर्जी है, इसलिये प्राचीगण के पक्ष में नामान्तरण  
 तस्दीक नहीं किया गया तथा रकारिज कर दिया गया। प्राचीगण का कृत्री  
 भी वादग्रस्त आराजी अथवा इसके अंदा पर कोई कब्जा नहीं रहा है।  
 वास्तविकता यह है कि जगन्नाथ तथा देवा ख० न० 202 ग्राह जगन्नाथपुत्र  
 की कृषि भूमि पर वर्षों से काबिज रहत है अक्त ने एक दावा उनवानी  
 जगन्नाथ व देवा बनाह ग्राह पंचायत मूहका व अन्य के विरुद्ध प्राप्त का  
 अक्त भूमि का लावेदा, काब्रकार घोषित कठि का अनुतोष हेतु  
 न्यायालय उपजण्ड जयपुरा कोर्ट में पेश किया। अक्त मुकदमा नम्बर  
 25/1968 दिनांक 20/5/1969 एस. डी. एम. कोर्ट से डिप्टी किया जाकर  
 जगन्नाथ व देवा गुर्जर को विवादित भूमि का रवावेदा काब्रकार  
 घोषित किया गया। अक्त निर्णय व डिप्टी की किसी भी व्यक्ति  
 द्वारा कोई अपील नहीं किये जाने के कारण यह अंतिम हो गई थी।  
 इस डिप्टी के परिणाम अक्त भूमि में जगन्नाथ व देवा गुर्जर  
 - लगातार

  
 उपजण्ड अधिकारी  
 जयपुर द्वितीय (सौमानेर)

10 विसा 10 विसा 10 विसा (लगभग) जगन्नाथ व दस बीघा 10 विसा (लगभग)  
 202 की 10 बीघा 10 विसा भूमि का ही जगन्नाथ था इसके अतिरिक्त  
 भूमि पर जगन्नाथ का कोई एक व अधिकार नहीं था प्रार्थिगण  
 का यह कथना जलत है कि जगन्नाथ द्वारा दिनांक 07/11/97 को  
 मुकदमा नं. 9 मात को 07/11/97 रकम 20 बीघा 5 विसा में  
 उसके 1/3 भाग 6 बीघा 15 विसा भूमि को विक्रय किया गया तथा  
 कब्जा दिया गया। वास्तव में श्री जगन्नाथ द्वारा मुकदमा नं. 9 मात  
 को दिनांक 07/11/97 को कोई भूमि विक्रय नहीं की गई ना कब्जा दिया  
 गया दिनांक 07/11/97 का विक्रय पत्र फर्मा व बनायी है। जगन्नाथ के  
 भाई गुल्ला से विवाद होने के कारण उसके सुब्बे तथा उसके द्वारा  
 किये गये मुकदमा नं. 83/1992 दिनांक 12/5/1992 की पालना में  
 जगन्नाथ को आधे हिस्से की भूमि गुल्ला पक्ष को देनी पड़ी थी जो  
 अब गुल्ला के वारिसान के कब्जे व खतेदारी में है। जगन्नाथ की  
 मृत्यु से जाने के कारण उसके कब्जे व खतेदारी की लगभग  
 5 बीघा 7 विसा भूमि उसके वारिसान के कब्जे व खतेदारी राजस्व  
 रिकार्ड में दर्ज है। अप्रार्थिगण वादग्रस्त आरानी के रिकॉर्ड में खतेदार  
 का विधि कावचकार है। प्रार्थिगण का वादग्रस्त आरानी से कोई लेना  
 नहीं है। विशेष कथनानुसार प्रार्थिगण तुलसीराज कौर ने पूर्व में  
 इसी विषय वस्तु पर वादग्रस्त सम्पत्ति के संबंध में समान अनुसंधान  
 मांगते हुए धोषणा व विपेक्षा का एक नया उक्तानी तुलसीराज  
 व अन्य बनाम हीर व अन्य मुकदमा नं. 44/2012 रजि. सी. ए.  
 कोर्ट जयपुर में प्रस्तुत किया था उक्त मुकदमे में प्रार्थिगण द्वारा प्रस्तुत  
 टी. आई. प्रार्थिगण - मायालय द्वारा खारिज कर दिया गया, जिसकी  
 अपील सं. 6/2013 भी न्यायालय राजस्व अपील अधिकारी जयपुर  
 द्वारा 12/2/2013 को खारिज कर दी गई और उक्त निष्पत्ति के विषय में  
 रीवेन्यू बोर्ड जयपुर द्वारा दिनांक 24/3/2013 को खारिज कर दिया  
 गया। प्रार्थिगण ने न्यायालय के अन्य आदेश की अपील भी  
 न्यायालय संसारीय आयुक्त के समक्ष प्रस्तुत की थी उक्त अपील  
 सं. 232/2012 दिनांक 23/06/2014 को न्यायालय संसारीय आयुक्त  
 द्वारा खारिज कर दी गई। उक्त खारिजी के तथ्यों को धिपते हुए  
 प्रार्थिगण की ओर से पुनः उन्ही आधारों पर एक अपील संख्या  
 130/2022 न्यायालय संसारीय आयुक्त, जयपुर के समक्ष प्रस्तुत  
 कर दी गई, परन्तु बाद में न्यायालय द्वारा चोरी पकड़े जाने पर  
 माफी मांगते हुए प्रार्थिगण ने उक्त अपील को दिनांक 28/3/24  
 को नोट प्रेष कर लिया जिसका अर्थ है कि प्रार्थिगण ने उक्त अपील  
 में वर्धित आधारों का अभिलेख का दिया और इस कारण भविष्य में  
 वह उक्त आधारों को नहीं उठा सकते हैं। प्रार्थिगण द्वारा पूर्व में एक  
 टी. एम. कोर्ट में प्रस्तुत मुकदमा नं. 44/2012 उक्तानी तुलसीराज  
 व अन्य बनाम हीर व अन्य भी दिनांक 19/2/2014 को न्यायालय  
 के आदेश की अनुपालना नहीं कले के कारण खारिज कर दिया  
 गया था, इसलिये उन्ही आधारों व अधिकारों पर प्रस्तुत वर्तमान


 लगातार


उपखण्ड अधिकारी  
 जयपुर द्वितीय (सांगानेर)

नाद पत्र लिखी नाद हेतुक दिनांक 10/11/2012 का ही बताया है, इस प्रकार प्राचीण के पक्ष में सुविधा-सन्तुलन का विन्दु नहीं है। अतः जलप प्राचीण पत्र अर्थात् निषेधाज्ञा पत्र शपथ पत्र प्रस्तुत करने के बिना प्राचीण का आणख अर्थात् निषेधाज्ञा खारिज किया

नवीन उद्यमपत्रों की वस्तु (सुविधा) नवीन प्राचीण ने अपनी वस्तु में अधिपत्र में अंकित तथ्यों को दोहराने हुए प्राचीण का आणख स्वीकार किये जाने हेतु निवेदन किया गया तथा नवीन अधिपत्र ने अपनी वस्तु में जलप आणख में अंकित तथ्यों को दोहराने हुए प्राचीण का आणख अर्थात् निषेधाज्ञा दिनांक 14/11/24 को जारी खारिज किये जाने निवेदन किया गया।

पञ्जाबी, राजल रिकार्ड, डाटाबेज प्रस्तुत, अधिपत्र व जलप प्राचीण का आधीपत्र अर्थात् नवीन व नवीन उद्यमपत्रों की वस्तु का मन्त्र करि पर हम इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि सर्वप्रथम तदर्थ रूप से अर्थात् निषेधाज्ञा जारी किये जाने हेतु शक्ति-सुविधा का सन्तुलन एवं प्रथम दृष्टया केस पर विचार किया जाना आवश्यक है जहाँ तक प्रथम दृष्टया वाद होने का प्रश्न है, इस सदर्भ में जो विद्युत पत्र दिनांक 07/11/75 प्राचीण ने प्रस्तुत किया है उसकी वैधता संदेहप्रद व पुनर्लिखित है। उसके आधार पर नामान्तकण भी वल्लभदर दारा अडिवा दिनांक 16/04/1979 को निरस्त किया जा चुका है जिसके उपरान्त अभी तक कोई विपरीत विधि परिस्थिति का प्रलेख प्रस्तुत नहीं किया गया है किन्तु जगन्नाथ का विद्युत की गई भूमि में से उसके हिस्से द्वारा दक्षिण हिस्सा होने के बारे में भी परिस्थिति स्पष्ट नहीं है। नाद का अंतिम निर्णय को साक्ष्य, सवाल व दस्तावेजों के आधार पर वाद पञ्जाबी में तय किया जायेगा। किसी गैर स्वलेख दारा स्वलेख को किसी प्रकार पकड़ कर जलप न्यायोचित नहीं है ऐसा किये जाके से जलप के एक हक के पक्ष में नही माना जा सकता; विशेषकर इस परिस्थिति में कि प्रथम दृष्टया आधिपत्य भूमि पर उनका वस्तुतः आधिपत्य व काल का भी कोई स्थापित प्रमाण नहीं है। अपूर्णनीय जलप का जहाँ तक संबंध है वह भी प्राचीण के पक्ष में प्रमाणित नहीं होती क्योंकि प्रथम दृष्टया आधिपत्य भूमि के आधार पर विकसित भूमि पर कब्जा, विधिक सामान्य कृम में माना जाएगा। अतः नवीन अधिपत्र के पक्ष में हैं। सुविधा का सन्तुलन भी अधिपत्र के पक्ष में है क्योंकि उनका वास्तविक आधिपत्य व काल प्रथम दृष्टया स्थापित है मात्र खैदानिक तर्क व परिस्थिति के आधार पर अर्थात् निषेधाज्ञा जारी करना न्यायोचित नहीं होगा और ऐसे अडिवा की आज में अनावश्यक दाँडिक प्रकरण उत्पन्न होगी।

अतः विवेचन के प्रकार से निष्कर्ष है कि प्राचीण - लगातार

  
उपखण्ड अधिकारी  
अजपुर द्वितीय (सीमानेर)

प्राथमिक अस्थाई निवेशका प्राप्त करने का अधिकारी नहीं है।  
 डा. 202, के.एल.ए.नं. 269, 270, 271, 272, 273, 275,  
 285, 286, 287, 318 (कुल किला 10 कुल रकवा 5.07 हे० पर  
 इस न्यायालय द्वारा दिनांक 14/05/2024 को दी गई अंतरिम  
 अस्थाई निवेशका को मिरस किया जाता है तथा प्राथमिक  
 का पार्थक्य पत्र वाकत अस्थाई निवेशका रकारिज किया जाता है।

पनापनी फौजदारी लेकर दर्ज नम्बर कम हो, बाद  
 तकमीक बाद पनापनी के साथ संलग्न हो।

मिर्जा आज दिनांक 13/8/2024 को खुले न्यायालय  
 से आम सुनवाई।



उपरोक्त अधिकारी  
 जयपुर जिला (जागर)